December 2013

TODAY

(Newsletter of EURASIA REIYUKAI)

No. 1, Vol. 6

खांग्यो अभ्यास के सम्बन्ध में जानकारी

५ जनवरी २०१४ से ४ फरवरी २०१४ तक जुन-होजाशु से ऊपर के लिडर्स खांग्यो अभ्यास करने का मौका प्राप्त करने के कारण इस विषय पर विस्तृत जानकारी के लिए अपनी नजदीकी मिहाता शाखा या यूराशिया रेयूकाई समाज विकास केन्द्र में सम्पर्क करने की जानकारी कराना चाहते हैं।

२८वीं शाखा के मिहाता जिम्मेवार शिबुचो श्री लाल कुमार श्रेष्ठ जी की अपील

यूराशिया रेयूकाई २८वीं शाखा १० मार्च २००७ में जन्म लेकर नेपाल देश के पूर्वी क्षेत्र भद्रपुर में अपना मुख्य हाल बनाकर अभ्यास करने का मौका प्राप्त कर रहें हैं। फिलहाल नेपाल देश के मेची, कोशी, सगरमाथा, जनकपुर एवं बागमती अंचल एवं भारत देश के पश्चिम बंगाल, बिहार, झारखंड, महाराष्ट्र राज्यों मे मिलाकर कुल ३,१०,६६९ सदस्यों यूराशिया रेयूकाई २८वीं शाखा की मिहाता की छांव में साथ-साथ अभ्यास करने का मौका प्राप्त कर रहे हैं। इसे उजियाले, फुर्तिले एवं महत्वपूर्ण शाखा बनाने के लिए ***"यूराशिया रेयूकाई २८वीं शाखा मेरा गौरव"*** की भावना लेकर, सभी एकजुट होकर अभिभावक एवं देशभक्ति से युक्त आदर्श व्यक्ति बनने का सामूहिक प्रयास करने का मौका प्राप्त कर रहे हैं।

यूराशिया रेयूकाई समाज में योगदान देने वाली संस्था है। यह संस्था किसी धर्म, राजनीति या लिंग से बिल्कुल कोई सम्बन्ध नहीं रखती। यूराशिया रेयूकाई समाज में योगदान देने वाले ज्यादा से ज्यादा व्यक्तियों का निर्माण कर विश्वशांति का लक्ष्य लेकर विगत ४० वर्षों से क्रियाशील है। इस संस्था में आबद्ध होने वाले व्यक्ति पूर्वज स्मरण, कर्म शुद्धिकरण और प्रायश्चित अभ्यास कर अंतरात्मा का विकास करने का मौका प्राप्त कर सकते हैं। केवल स्वयं खुश और शांत नहोकर, अन्य व्यक्तियों के बारे में सोचने, औरों की खुशी के लिए काम करने वाला व्यक्ति बनकर समाज में योगदान दे सकने का महान् कार्य करने के लिए रेयूकाई की मिचिविकी को माध्यम बना सकते हैं।

इसलिए आइए ! रेयूकाई की मिचिविकी के माध्यम से आप-हम मिलकर इस संस्था से आबद्ध होकर पूर्वजों और अभिभावकों का आशीर्वाद और अनुभव को इंधन बनाकर युवा वर्ग के उत्साह, उमंग व शक्ति को समाज और देश के विकास में लगाएं। महिलाओं में रहने वाले ज्ञान, हूनर एवं क्षमता को केवल घर में ही न रखकर समाज में उसका प्रयोग करने का कार्य करें। बच्चे भविष्य का कर्णधार हैं, उनमें बचपन से ही अभिभावक भक्ति, देशभक्ति आदि अच्छी-अच्छी भावनाएं जगाकर उन्हें उत्साहित बनाने वाले कार्य करें। वर्तमान की बडी समस्या जलवायु परिवर्तन, विविध किस्म की समस्याएं देखी जा रही हैं। प्रकृति को पहले की तुलना में और अच्छा बनाकर भावी संतति को उज्ज्वल भविष्य हस्तांतरित नहीं करने से नहीं होगा, वह मुझे करना है, रेयूकाई के सदस्यों को करना हैं, ऐसी भावना लेकर कृतज्ञता को आधार बनाकर कार्य करने वाला व्यक्ति तैयार करते जाएं। कृतज्ञता ही रेयूकाई शिक्षा का आधार होने के कारण महान् शिक्षा के प्रति, महाप्रकृति के प्रति, अभिभावकों के प्रति कृतज्ञ होकर शांतिपूर्ण और समुन्नत यूराशिया महाद्वीप का निर्माण करने के लिए सभी एकजुट होकर प्रयास करें।

यूराशिया रेयूकाई २८वीं शाखा के भवन

महागुरू काकुतारो कुबो जी का ७० वां पुण्यतिथि स्मरण समारोह संपन्न

महागुरु काकुतारो कुबो जी का ७० वां पुण्यतिथि स्मरण समारोह १८ नवम्बर २०१३ के दिन भव्यतापूर्वक आयोजित करने का मौका प्राप्त हुआ। यूराशिया रेयूकाई के संस्थापक अध्यक्ष श्री युशुन मासुनागा जी एवं मुमा हिरोको मासुनागा जी की उपस्थिति में यूराशिया रेयूकाई मिहाता, केञ्जीचुकी मिहाता, यूराशिया रेयूकाई १८वीं एवं २१वीं शाखा के मिहाता विराजमान कर यूराशिया रेयूकाई २१वीं शाखा के गोहोजा कक्ष, सिलिगुडी (भारत) में आयोजन करने का मौका प्राप्त हुआ। उक्त समारोह में संस्थापक अध्यक्ष जी द्वारा मार्गनिर्देशन प्रदान किया गया।

साथ ही यूराशिया रेयूकाई ११वीं शाखा धोबिधारा, १३वीं शाखा टीकापुर, १५वीं शाखा कौशलटार, १७वीं शाखा भैरहवा, २२वीं शाखा बर्दघाट, २५वीं शाखा धोबीधारा एवं २८वीं शाखा भद्रपुर में अपनी-अपनी मिहाता विराजमान कराकर समारोह का आयोजन किया गया। साथ ही नेपाल और भारत देशों के सम्पूर्ण संस्कृति केन्द्रों, म्यानमान तथा बांग्लादेश मिलाकर कुल २,८१४ लोगों की सहभागिता रही। इनके अलावा मिहाता शाखाओं के सम्पर्क कार्यालयों में भी भव्यतापूर्वक यह समारोह आयोजित करने का मौका पाकर महागुरु काकुतारो कुबो जी के प्रति गुण लौटाने का महान् मौका प्राप्त हुआ।

खुशी का अनुभव

नाम : श्रीमती देव कुमारी विष्ट
उपाधि : होजाशु
मिहाता शाखा : यूराशिया रेयूकाई १८वीं शाखा
क्षेत्र : दार्जिलिंग (भारत)

सभी को मेरा हार्दिक नमस्कार !

मेरा नाम देव कुमारी विष्ट है, मैं दार्जीलिंग क्षेत्र में रहती हूँ । मुझे इस महान् शिक्षा में प्रवेश कराने वाली मेरी ओया, स्पाउस शिबुचो श्रीमती पेमला शेर्पा एवं शिबुचो श्री पासांग फुरी शेर्पा जी हैं । मैं सन् २०१० में अपने बच्चों की पढाई को लेकर दार्जिलिंग में रहने लग गयी । शायद अच्छे कर्म के संबंधों के कारण ही मैं परिवार के साथ रेयूकाई शिक्षा का अभ्यास करने का मौका प्राप्त कर सकी । इस प्रकार साथ रहने के कारण मेरी ओया ने मुझे रेयूकाई शिक्षा के संबंध में काफी बातें समझायी और सदस्य बनने का आग्रह किया । लेकिन मैं हिन्दू धर्म की परंपरा के अनुरुप पली-बढी होने के कारण मेरे मन में विभिन्न प्रकार के विचार उत्पन्न होने लगे । जापान देश से रेयूकाई भारत में धर्म प्रचार करने के लिए तो शायद नहीं आयी है, मुझे कही इस संस्था में प्रवेश करने के बाद कही अपना धर्म तो नहीं बदलना पडेगा, इस तरह की विभिन्न शंकाएं मेरे मन में उठने लग गयीं । एक दिन मेरी ओया ने मुझे रेयूकाई के कार्यक्रम में जाने का आग्रह किया । वहां जाकर मैं अपने अग्रजों का मन्तव्य सुनने का मौका प्राप्त की । मुझे वहां का वातावरण काफी आनंददायक लगा । वहां के उत्साह, मेल-मिलाप, मुस्कान से भरे अभिभादन करने वाले माहौल ने मुझे काफी आकर्षित किया, मेरा मन आनंदीत हो गया । वहां से लौटने के बाद जून २०१० में मैं सदस्यता ग्रहण करने का मौका प्राप्त की । २७ जुलाई २०१० को मेरे घर में सोकाईम्यो का स्वागत कर पूर्वज स्मरण करने का मुझे महान् मौका प्राप्त हुआ । इस प्रकार अपने घर में सोकाइम्यो का स्वागत करने का महान् मौका प्राप्त करने के बाद सुबह-शाम पानी चढाकर सूत्रपाठ चढाने का मौका प्राप्त करने पर मुझमें आत्मविश्वास पैदा हुआ, अब मुझे औरों की खुशी के लिए काम करना है, मिचिविकी करनी पडेगी । इस संसार में जन्म लेकर आने के बाद मैं आजतक औरों के विषय में नहीं सोची, अपने पूर्वजों की आत्मा की शांति के लिए कभी प्रार्थना भी नहीं की, इस तरह का मन में पश्चाताप् के विचार उठने लगे । आजकल मैं प्रति दिन सुबह-शाम सूत्रपाठ चढाकर पूर्वज स्मरण करने का महान् मौका प्राप्त कर रही हूँ । ऐसा करने पर मेरे परिवार में भी परिवर्तन आया है । स्वयं में भी मिचिविकी का पुण्यफल संचित करने का जोश व उमंग आया है । अपनी ओया और शिबुचो के मार्गनिर्देशन अनुसार विभिन्न कार्यक्रमों में सहभागी होने का महान् मौका प्राप्त कर रही हूँ । ऐसा करने पर अपने में रहने वाली कमी-कमजोरी, बुरे व्यवहार आदि को समझ सकी हूँ और मिचिविकी भी कर सकी हूँ । रेयूकाई शिक्षा का स्वयं अभ्यास कर औरों को समझायी, अभ्यास करायी जा सकती है, ऐसा समझ सकी हूँ ।

मिचिविकी कर अभ्यास करने का मौका प्राप्त करने के कारण ५० जन से ज्यादा की मिचिविकी का पुण्यफल संचित करने का मौका पाकर ओया के मार्गनिर्देशन पाकर १४ अक्टूबर २०१२ के दिन गोहोम्यो आत्मागृहण जैसे महान् समारोह में अभ्यास करने का मौका पाकर १००० जन का गोहोम्यो अभ्यास १०० दिनों में पूरा कर अपने सदस्यों का सोकाईम्यो लिखकर स्थापना करने का महान् कार्य करने का मौका प्राप्त कर रही हूँ ।

महिला का जोश, उमंग और शक्ति लेकर मिचिविकी के माध्यम से समाज में योगदान देने वाले ज्यादा से ज्यादा लोगों की परवरिश करते जाने की प्रतिज्ञा करती हूँ ।

धन्यवाद !

भारतीय फुटबाल कप्तान द्वारा सिलीगुडी कार्यालय का भ्रमण

भारत देश की राष्ट्रीय फुटबाल टीम के कप्तान श्री सुनील छेत्री महान् रेयूकाई शिक्षा के बारे में समझने के लिए यूराशिया रेयूकाई प्रधान कार्यालय में आए और रेयूकाई शिक्षा, उसके सामाजिक क्रियाकलाप आदि की विस्तृत जानकारी प्राप्त की । रेयूकाई का पूर्वज स्मरण और अभिभावकों के प्रति कृतज्ञता लौटाने की बात उनके मन को काफी भायी है । उन्होंने अपनी धारणा व्यक्त करते हुए कहा कि आज के युवाओं के लिए रेयूकाई शिक्षा बहुत ही आवश्यक है ।

एम्बुलेंस सेवा

यूराशिया रेयूकाई समाज विकास में योगदान देने वाले ज्यादा से ज्यादा व्यक्ति का निर्माण करने का उद्देश्य लेकर स्थापित होने के कारण विभिन्न देशों में विभिन्न किस्म के सामाजिक एवं सेवामूलक कार्य करती आ रही है । इसी क्रम में भारत देश के पश्चिम बंगाल के कालिम्पोंग क्षेत्र में स्थानीय स्तर पर सहयोग पहुचाने के लिए एम्बुलेंस प्रदान किया गया ।

महिला हिंसा विरोधी जनचेतनामूलक कार्यक्रम संपन्न

यूराशिया रेयूकाई काठमांडू संस्कृति केन्द्र के तत्वावधान में शारीरिक अपांग संघ के अध्यक्ष श्री किरण शिल्पकार तथा नेपाल महिला अपांग संघ की अध्यक्ष श्रीमती रमा ढकाल जी की उपस्थिति में महिला हिंसा से सम्बन्धित एक दिवसीय जनचेतनामूलक एवं अंतर्क्रिया कार्यक्रम संपन्न हुआ ।

उक्त महिला हिंसा विरोधी जनचेतनामूलक कार्यक्रम में विभिन्न विषयवस्तु पर सामूहिक चर्चा-परिचर्चा की गयी । नेपाल देश के विभिन्न स्थानों से इसमें लोग सहभागी हुए । इस कार्यक्रम में महिला हिंसा विरोधी सीखी गई बातों को व्यवहारिक रुप में लागू करने एवं जनचेतना फैलाते जाने की प्रतिबद्धता जतायी ।

युवा शिक्कोबु का शुभारंभ

युराशिया रेयूकाई संस्थापक अध्यक्ष श्री युशुन मासुनागा जी ने ८ नवम्बर २०१३ को यूराशिया रेयूकाई शिक्कोबु हेडक्वार्टर का शुभारंभ किया, साथ ही यूराशिया रेयूकाई युवा शिक्कोबु गण को मान्यता-पत्र प्रदान कर उन्हे समुचित मार्गनिर्देशन प्रदान किया ।

यूराशिया रेयूकाई युवा शिक्कोबु हेडक्वार्टर धोवीधारा काठमांडू में बनाया गया है । उक्त कार्यालयका सम्पर्क नं. ०१-४४४१३५६ है ।

"हँसमुख चेहेरे से अभिवादन करें, हँसमुख चेहेरे से कृतज्ञता करें, हँसमुख चेहेरे से प्रशंसीत करें"
– युशुन मासुनागा, यूराशिया रेयूकाई संस्थापक अध्यक्ष